

‘हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है’
हिन्दी दिवस - 14 सितंबर

राजभाषा दर्पण

वर्ष : 2023 * त्रैमासिक * अंक : 3



दक्षिण पूर्व रेलवे
चक्रधरपुर मंडल

बाबा नागार्जुन

यथार्थ के धरातल के जनकवि बाबा नागार्जुन का जन्म 30 जून , 1911 को बिहार में हुआ था। उनका वास्तविक नाम 'वैद्यनाथ मिश्र' था। उन्होंने हिंदी में 'नागार्जुन' एवं मैथिली में 'यात्री' उपनाम से साहित्य सृजन किया। समकालीन सामाजिक व्यवस्था एवं राजनीति लोकजीवन और प्रकृति उनकी रचनाओं के प्रमुख विषय रहे हैं। छायावादोत्तर काल के वे ऐसे विलक्षण कवि हैं , जिनकी रचनाओं को गांव के चौपाल की खटिया से लेकर विद्वानों की भद्रमंडली में समान रूप से आदर मिलता है। उनकी रचनाएं इतनी सम्पूर्ण और जीवंत होती हैं कि पाठकों के मानस में उतर जाती हैं। उनकी कविताओं में धारदार व्यंग्य होता है। लोकहित के लिए प्रतिबद्धता उनके काव्य की प्रमुख विशेषता है। सत्ता के दरबारों में अपनी उपस्थिति दर्ज करने में उन्होंने कभी भी दिलचस्पी नहीं दिखाई और न ही कभी चाटुकारी की। जनहित की बातों पर उनकी निर्भीक कलम अनथक चलती रही। उनकी प्रमुख काव्य कृतियां हैं -

युगधारा , तालाब की मछलियां, प्यासी पथराई आंखें, हज़ार-हज़ार बाहों वाली, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, सतरंगे पंखों वाली, खिचड़ी विप्लव देखा हमने अपने खेत में आदि प्रमुख हैं। उन्होंने कुछ उपन्यास भी लिखा था। उनकी समस्त रचनाएं नागार्जुन रचनावली (7 खंड) में संकलित हैं। 5 नवंबर , 1998 को आपका देहावसान हो गया।

मेरी भी आभा है इसमें

- नागार्जुन

नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है

यह विशाल भूखंड आज जो दमक रहा है

मेरी भी आभा है इसमें

भीनी-भीनी खुशबूवाले

रंग-बिरंगे

यह जो इतने फूल खिले हैं

कल इनको मेरे प्राणों ने नहलाया था

कल इनको मेरे सपनों ने सहलाया था

पकी सुनहली फ़सलों से जो

अबकी यह खलिहान भर गया

मेरी रग-रग के शोणित की बूँदें इसमें मुस्काती हैं

नए गगन में नया सूर्य जो चमक रहा है

यह विशाल भूखंड आज जो चमक रहा है

मेरी भी आभा है इसमें ।

वह आता –
दो टूक कलेजे के करता
पछताता पथ पर आता ।

पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक ,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को, भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता ।

साथ दो बच्चे भी हैं सदा हाथ फैलाए,
बाएँ से वे मलते हुए पेट को चलते,
और दाहिना दया दृष्टि- पाने की ओर बढ़ाए

भूख से सूख ओठ जब जाते
दाता – भाग्य विधाता से क्या पाते ?
घूँट आंसुओं के पीकर रह जाते।

चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए,
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए !
ठहरो ! ओह मेरे हृदय में हैं अमृत, मैं सींच दूंगा
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम
तुम्हारे दुख मैं अपने हृदय में खींच लूँगा ।

राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी हमारे देश की एकता में सबसे सहायक सिद्ध होगी । - पं. जवाहर लाल नेहरू
हिन्दी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है । - राजर्षि टंडन
देवनागरी भारत के लिए वरदान है । - आचार्य विनोबा भावे ।

यदि भारतीय लोक कला, संस्कृति और राजनीति में एक रहना चाहते हैं, तो इसका माध्यम हिन्दी ही हो सकती है ।
- चक्रवर्ती राजगोपालाचारी

देश के सबसे बड़े भू – भाग में बोली जाने वाली हिन्दी ही राष्ट्रभाषा पद की अधिकारिणी है। - सुभाष चन्द्र बोस
हिन्दी को अपनाए बिना राष्ट्रीय एकता संभव नहीं । - आचार्य कृपलानी
व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है । - महात्मा गांधी

विधाता

- विनोद शंकर व्यास

चीनी के खिलौने, पैसे में दो; खेल लो, खिला लो, टूट जाए तो खा लो—पैसे में दो। सुरीली आवाज में यह कहता हुआ खिलौनेवाला एक छोटी-सी घंटी बजा रहा था। उसको आवाज सुनते ही त्रिवेणी बोल उठी—माँ, पैसा दो, खिलौना लूँगी।

आज पैसा नहीं है, बेटा।

एक पैसा माँ, हाथ जोड़ती हूँ। नहीं है त्रिवेणी, दूसरे दिन ले लेना।

त्रिवेणी के मुख पर सन्तोष की झलक दिखलाई दी।

उसने खिड़की से पुकार कर कहा - ऐ खिलौनेवाले, आज पैसा नहीं है; कल आना।

चुप रह, ऐसी बात भी कहीं कही जाती है ? उसकी माँ ने भुनभुनाते हुए कहा। ।

तीन वर्ष की त्रिवेणी की समझ में न आया। किन्तु उसकी माँ अपने जीवन के अभाव का पर्दा दुनिया के सामने खोलने से हिचकती थी। कारण, ऐसा सूखा विषय केवल लोगों के हँसने के लिए ही होता है।

और सचमुच वह खिलौनेवाला मुस्कुराता हुआ, अपनी घंटी बजाकर, चला गया।

सन्ध्या हो चली थी। लज्जावती रसोईघर में भोजन बना रही थी। दफ्तर से उसके पति के लौटने का समय था। आज घर में कोई तरकारी न थी, पैसे भी न थे। विजय कृष्ण को सूखा भोजन ही मिलेगा! लज्जा रोटी बना रही थी और त्रिवेणी अपने बाबूजी की प्रतीक्षा कर रही थी। माँ, बड़ी तेज भूख लगी है। कातर वाणी में त्रिवेणी ने कहा।

बाबूजी को आने दो, उन्हीं के साथ भोजन करना, अब आते ही होंगे --लज्जा ने समझाते हुए कहा। कारण, एक ही थाली में त्रिवेणी और विजय कृष्ण साथ बैठकर नित्य भोजन करते थे और उन दोनों के भोजन कर लेने पर उसी थाली में लज्जावती टुकड़ों पर जीने वाले अपने पेट की ज्वाला को शान्त करती थी जूठन ही उसका सोहाग था !

लज्जावती ने दीपक जलाया। त्रिवेणी ने आँख बन्द कर दीपक को नमस्कार किया; क्योंकि उसकी माता ने प्रतिदिन उसे ऐसा करना सिखाया था। द्वार पर खटका हुआ। विजय दिन-भर का थका लौटा था। त्रिवेणी ने उछलते हुए कहा—माँ, बाबूजी आ गये । विजय कमरे के कोने में अपना पुराना छाता रखकर खूँटी पर कुरता और टोपी टाँग रहा था। लज्जा ने पूछा—महीने का वेतन आज मिला न?

नहीं मिला, कल बँटेगा। साहब ने बिल पास कर दिया है।—हताश स्वर में विजय कृष्ण ने कहा।

लज्जावती चिन्तित भाव से थाली परोसने लगी। भोजन करते समय, सूखी रोटी और दाल की कटोरी की ओर देखकर विजय न जाने क्या सोच रहा था। सोचने दो; क्योंकि चिन्ता ही दरिद्रों का जीवन है और आशा ही उनका प्राण। किसी तरह दिन कट रहे थे। रात्रि का समय था। त्रिवेणी सो गई थी, लज्जा बैठी थी।

देखता हूँ, इस नौकरी का भी कोई ठिकाना नहीं है।—गम्भीर आकृति बनाते हुए विजय कृष्ण ने कहा।

क्यों ! क्या कोई नई बात है ?—लज्जावती ने अपनी झुकी हुई आँखें ऊपर उठाकर, एक बार विजय की ओर देखते हुए, पूछा।

बड़ा साहब मुझसे अप्रसन्न रहता है। मेरे प्रति उसकी आँखें सदैव चढ़ी रहती हैं।

किसलिए?

हो सकता है, मेरी निरीहता ही इसका कारण हो।

लज्जा चुप थी। पन्द्रह रुपये मासिक पर दिन-भर परिश्रम करना पड़ता है। इतने पर भी।

ओह, बड़ा भयानक समय आ गया है!—लज्जावती ने दुःख की एक लम्बी साँस खींचते हुए कहा।

मकानवाले का दो मास का किराया बाकी है, इस बार वह नहीं मानेगा।

इस बार न मिलने से वह बड़ी आफत मचायेगा—लज्जा ने भयभीत होकर कहा।

क्या करूँ ? जान देकर भी इस जीवन से छुटकारा होता।

ऐसा सोचना व्यर्थ है। घबड़ाने से क्या लाभ? कभी दिन फिरेंगे ही।

कल रविवार है, छुट्टी का दिन है, एक जगह दुकान पर चिट्ठी-पत्री लिखने का काम है। पाँच रुपये महीना देने को कहता था। घन्टे-दो-घन्टे उसका काम करना पड़ेगा। मैं आठ माँगता था। अब सोचता हूँ, कल उससे मिलकर स्वीकार कर लूँ। दफ्तर से लौटने पर उसके यहाँ जाया करूँगा— कहते हुए विजयकृष्ण के हृदय में उत्साह की एक हल्की रेखा दौड़ पड़ी।

जैसा ठीक समझो!—कहकर लज्जा विचार में पड़ गई।

वह जानती थी कि विजय का स्वास्थ्य परिश्रम करने से दिन-दिन खराब होता जा रहा है। मगर रोटी का प्रश्न था ! दिन, सप्ताह और महीने उलझते चले गये। विजय प्रतिदिन दफ्तर जाता। वह किसी से बहुत कम बोलता । उसकी इस नीरसता पर प्रायः दफ्तर के अन्य कर्मचारी उससे व्यंग्य करते। उसका पीला चेहरा और धँसी हुई आँखें लोगों को विनोद करने के लिए उत्साहित करती थीं। लेकिन वह चुपचाप ऐसी बातों को अनसुनी कर जाता, कभी उत्तर न देता। इस पर भी सब उससे असन्तुष्ट रहते थे।

विजय के जीवन में आज एक अनहोनी घटना हुई। वह कुछ समझ न सका। मार्ग में उसके पैर आगे न बढ़ते। उसको आँखों के सामने चिनगारियाँ झलमलाने लगीं। मुझसे क्या अपराध हुआ?—कई बार उसने मन ही में प्रश्न किए। घर से दफ्तर जाते समय बिल्ली ने रास्ता काटा था। आगे चलकर खाली घड़ा दिखाई पड़ा था। इसीलिए तो सब अपशकुनों ने मिलकर आज उसके भाग्य का फैसला कर दिया था!

साहब बड़ा अत्याचारी है। क्या गरीबों का पेट काटने के लिए ही पूँजीपतियों का आविष्कार हुआ है ? नाश हो इनका—वह कौन-सा दिन होगा जब रुपयों का अस्तित्व संसार से मिट जाएगा? भूखा मनुष्य दूसरे के सामने हाथ न फैला सकेगा?—सोचते हुए विजय का माथा घूमने लगा। वह मार्ग में गिरते-गिरते सम्हल गया। सहसा उसने आँखें उठाकर देखा, वह अपने घर के सामने आ गया था; बड़ी कठिनाई से वह घर में घुसा। कमरे में आकर धम्म से बैठ गया।

लज्जावती ने घबराकर पूछा—तबीयत कैसी है ?

जो कहा था, वही हुआ।

क्या हुआ?

नौकरी छूट गई। साहब ने जवाब दे दिया— कहते-कहते उसकी आँखें छलछला गईं।

विजय की दशा पर लज्जा को रुलाई आ गई। उसकी आँखें बरस पड़ीं।

उन दोनों को रोते देखकर त्रिवेणी भी सिसकने लगी। संध्या की मलिन छाया में तीनों बैठकर रोते थे।

इसके बाद शांत होकर विजय ने अपनी आँखें पोंछीं; लज्जावती ने अपनी और त्रिवेणी की। क्योंकि संसार में एक और बड़ी शक्ति है, जो इन सब शासन करनेवाली चीजों से कहीं ऊँची है—जिसके भरोसे बैठा हुआ मनुष्य आँख फाड़कर अपने भाग्य की रेखा को देखा करता है।

शब्द - ज्ञान

अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द	अंग्रेजी शब्द	हिन्दी शब्द
Appointment	नियुक्ति	High priority	उच्च प्राथमिकता
Abuse of power	शक्ति का दुरुपयोग	Honorarium	मानदेय
Acquittal	दोषमुक्ति	Imprest	अग्रदाय
Act of misconduct	कदाचार	Inter- Se	परस्पर
Bilingual	द्विभाषी	Implementation	कार्यान्वयन
Benefit	लाभ	In- Charge	प्रभारी
Bio Data	जीवनवृत्त	Incentive	प्रोत्साहन
Casual vacancy	आकस्मिक रिक्ति	Incoming	आवक
Celebration	समारोह	Increment	वेतन वृद्धि
Carry out	पालन करना	Integrity	सत्यनिष्ठा
Charge sheet	आरोप पत्र	Instruction	अनुदेश
Circular	परिपत्र	Joint representation	संयुक्त अभ्यावेदन
De facto	वस्तुतः	Judicial	न्यायिक
Declaration	घोषणा	Justifiable	न्यायोचित
Designation	पदनाम	Joint Cadre	संयुक्त संवर्ग
Disposal	निपटान	Junior	कनिष्ठ
Deliberately	जान-बूझकर	Key Board	कुंजी पटल
Efficient	दक्ष	Knowingly	जान-बूझ कर
Eligible	पात्र	Keynote Address	आधार व्याख्यान
Evaluation	मूल्यांकन	Last date	अंतिम तिथि
Extension	विस्तार	Law and order	कानून और व्यवस्था
Fixed pay	नियत वेतन	Layout	विन्यास
follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई	Leave account	छुट्टी का लेखा
Gratuity	उपदान	Legal	विधिक , कानूनी
Guidelines	मार्गदर्शी सिद्धांत	Modified	संशोधित
Haulage	ढुलाई	Merit order	योग्यता क्रम
Head of account	लेखा- शीर्ष	Notified	अधिसूचित

राजभाषा – ज्ञान

- प्रश्न 1 राजभाषा आयोग के प्रथम अध्यक्ष कौन थे ?
उत्तर- श्री बालासाहब गंगाधर खेर ।
- प्रश्न 2 संसदीय राजभाषा समिति में कुल कितने सदस्य होते हैं ?
उत्तर- 30 सदस्य (20 लोकसभा एवं 10 राज्यसभा) ।
- प्रश्न 3 राजभाषा अधिनियम कब पारित हुआ ?
उत्तर- 1963 ।
- प्रश्न 4 केंद्रीय हिंदी समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं ?
उत्तर- प्रधान मंत्री ।
- प्रश्न 5 रेल हिन्दी सलाहकार समिति के अध्यक्ष कौन होते हैं ?
उत्तर- रेल मंत्री ।
- प्रश्न 6 रेल मंत्रालय का निरीक्षण संसदीय राजभाषा समिति की कौन - सी उप समिति करती है ?
उत्तर- दूसरी उप समिति द्वारा ।
- प्रश्न 7 राजभाषा नियम 1976 में प्रथम बार संशोधन किस वर्ष किया गया ?
उत्तर- 1987 ।
- प्रश्न 8 हर वर्ष हिन्दी दिवस कब मनाया जाता है ?
उत्तर- 14 सितंबर ।
- प्रश्न 9 राजभाषा का वार्षिक कार्यक्रम कौन तैयार करता है ?
उत्तर- राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ।
- प्रश्न 10 राजभाषा नियम के अधीन वर्गीकृत तीन क्षेत्र कौन- कौन से हैं ?
उत्तर- 'क', 'ख' तथा 'ग' क्षेत्र ।
- प्रश्न 11 संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल की गयी विदेशी भाषा कौन- सी है ?
उत्तर- नेपाली ।
- प्रश्न 12 राजभाषा नीति की जानकारी देने वाले अनुच्छेद 343 से 351 संविधान के किस भाग में हैं ?
उत्तर- भाग 17 ।

यह इतिहास गवाही है ,
बिना संरक्षा तबाही है ।
संरक्षा से बगावत,
दुर्घटना को दावत ।

कबीर - वाणी

बड़ा भया तो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर ॥

ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करे, आपहुं शीतल होय ॥

यह तन विष की बेलरी, गुरु अमृत की खान ।
शीश दियो जो गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ॥

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करे न कोय ।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुःख काहे को होय ॥

माटी कहे कुम्हार से, तू क्या रौंदे मोहे ।
एक दिन ऐसा आएगा, मैं रौंदूंगी तोहे ॥

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय ।
बिन पानी, साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय ॥

पोथि पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय ॥

संरक्षक
अरुण जातोह राठौड़
मंडल रेल प्रबंधक

मार्गदर्शन
विनय कुजूर
अपर मंडल रेल प्रबंधक
सह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

‘राजभाषा दर्पण’ में प्रकाशनार्थ रचनाएं srrba.ckp@gmail.com पर ई-मेल की जा सकती हैं अथवा राजभाषा विभाग, चक्रधरपुर को भेजी जा सकती हैं।

प्रकाशक : राजभाषा विभाग, चक्रधरपुर

फोन (रेलवे) : 72379